girls going to Singapore for employment and the subsidy being given by the Government to such girls, is concerned, it is not true. The Government is not supporting such travel of young girls. Sir, that much I can say. I do concede that even some countries are attracting girls from this country, it may be Gulf, it may be Singapaore, and here we have to take preventive measures. That is why, I said, laws are to be amended in this respect. The Government is also considering as to how to prevent this problem.

श्रीमती वीणा वर्मा: माननीय सभापति जी, सभी प्रश्न सप्लीमेंटरी द्वारा श्रीमती रेणुका जी ने पूछ लिए हैं, मैं सिर्फ एक छोटा सा प्रश्न इस संबंध में माननीय मंत्री जी से पूछना चाहती हूं। अभी मेरे पूर्व माननीय सदस्य ने भी यह पूछा कि बहुत सी औरतें दूसरी कंट्रीज में से लाई जा रही हैं और वहां उस तरह से प्रोस्टीट्यूशन, बच्चों का प्रपस्टीटप्यूशन शुरु होता है या इल्लीगल चाइल्ड पैदा होते हैं और वह भी उस पेशहे में डाल दिए जाते हैं। दूसरी तरफ हमारे देश में बहुत से विदेशी आ रहे हैं और अनब्याही मां जो है यहां बन रही हैं। अब वह अपने बच्चों को वापस नहीं ले जा सकते हैं। पुष्कर में और कई जगह के केसेज अखबारों में मैंने पढ़े थे। हमारा कानून ऐसे बच्चे वापस ले जाने के लिए परमिट नहीं करता क्योंकि वह अपने फादर का नाम नहीं बता सकते, बच्चों के फादर का नाम नहीं बता सकते। तो ऐसे बच्चों को बाहरी देश में भेजने के लिए, जो उन्हें ले जाना चाहते हैं या ऐसे नागरिक जो सिंगल आए थे और डबल हो गए और बच्चे को ले जाना चाहते हैं, उसके लिए क्या आप कोई कानून में संशोधन का प्रस्ताव लाएंगे?

SHRI S.R. BOMMAI: Sir, so far as my knowledge goes, there is no prohibition on the mother to take back the child. This is the position, as far as my knowledge goes. But I would get the information. (*Interruptions*) I am saying that I have no complete information about it. I said it. But if that is the law, I think it needs to be amended.

*584. *[The Questions (Shri Suryabhan Patil Vahadane) was absent for answer vide col. 28 infra.]*

Decline in Urea output

*585. SHRI BRATIN SENGUPTA: Will the Minister of CHEMICAL & FERTILIZERS be pleased to state:

(a) whether the first six months of 1996 registered a six percent decline in urea output;

(b) if so, how will the target of 163 lakh tonnes in 1996-97 be achieved; and

(c) if so, how the requirement for urea will be met?

रसायन और उर्वरक मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री शीश राम ओला): (क) से (ग) एक विवरण पत्र सभा पटल पर रख दिया गया है।

विवरण

(क) पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान प्राप्त उत्पादन की तुलना में 1996-97 के प्रथम छः महीनों में युरिया के उत्पादन में 5.1% की कमी आई है।

(ख) 1996-97 में यूरिया का उत्पादन 162.73 लाख टन के लक्ष्य की तुलना में 156.20 लाख टन था।

(ग) 1996-97 के दौरान 23.28 लाख टन यूरिया का आयात करके स्वदेशी उपलब्धता तथा मांग के बीच के अन्तर को पूरा किया गया था। इस वर्ष के दोनों फसल मौसमों के दौरान सभी राज्यों में यूरिया की मांग पर्याप्त रूप से पूरी की गई थी।

SHRI BRATIN SENGUPTA: Would the hon. Minister kindly tell us as to what are the specific factors and reasons for the decline in urea production?

श्री शीश राम औला: सभापति महोदय, यूरिया के प्रोडक्शन में कोई कमी के कारण आपूर्ति में दिक्कत आई हो, ऐसा नहीं है। हमने वर्ष 1996-97 में 162.73 लाख टन यूरिया का उत्पादन करना था, जिसके विपरीत 156.20 लाख टन यूरिया का हमारे यहां उत्पादन हुआ। इस प्रकार 6.53 लाख टन की कमी हुई। इस वर्ष 23.53 लाख टन यूरिया आयात किया गया और वर्ष 1996-97 में ओपनिंग स्टाक में 24 लाख टन यूरिया हमारे पास था। इस प्रकार से गए वर्ष में दोनों फसलों में यूरिया ठीक से, पर्याप्त मात्रा में, किसान को मिल सका।

SHRI BRATIN SENGUPTA: Sir, the statement itself says that there has been a decline in the urea production. But the

hon. Minister says that there is no decline. I do not know what to say.

Anyway, my second supplementary is: what has the Government done about the revival package? What has the Government done in regard to taking the investible surplus from the profit-making fertiliser units and using it for the revival of the sick public sector fertiliser production units, in order to increase the indigenous production and to move towards the stoppage of imports of nitrogenous fertilisers?

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, the hon. Minister has not explained as to why the urea production has come down, which was the first supplementary of the hon. Member.

श्री शीश राम ओला: सभापति महोदय, ऐसा है कि ईंडो गल्फ फर्टिलाइजर यूनिट किन्हीं कारणों से तीन महीने तक बंद रहा। इसलिए 2 लाख 50 हजार टन यूरिया की कमी उत्पादन में आई। उसके मशीन डाऊन हो गई और मरम्मत जल्दी नहीं हो सकी। आर०सी०एफ० को 1,77,000 मी० टन यूरिया की कमी विभिन्न कारणों से हुई। एन०एफ०सी०एल० को 1,66,000 मीट्रिक टन यूरिया की कमी गैस न मिलने, नाफ्टा न मिलने, क्रेडिट आदि की कमी से हुई। कुल 6 लाख टन यूरिया की जो कमी हुई, यह कमी इन तीन यूनिटों की वजह से हुई। यह कहना उचित नहीं है, श्रीमान जी, कि हम यूरिया का प्रोडक्शन बढ़ा नहीं रहे हैं। 1993-94 में 133.48 लाख टन यूरिया का उत्पादन हुआ, वहीं 1994-95 में 141.43 लाख टन यूरिया का उत्पादन हुआ. ..(**व्यवधान**)... आप मुझे कहने दीजिए, आपका क्वेश्चन मैं सुन लूंगा। पहले मेरी बात सुन लीजिए. मैंने आपको सुना है, आपको क्या दिक्कत है? ...(**व्यवधान**)...

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, he is refusing to systematically reply to the supplementary.

श्री शीश राम ओला: मेरी बात सुन लें। मैं आपको ..(**व्यवधान**)..

SHRI NILOTPAL BASU: Sir, he has been asked whether the production has been coming down...

MR. CHAIRMAN: Let the Minister complete, please. Please complete your reply, Mr. Minister. ...*(Interruptions)*

Let the Minister complete his reply, please.

श्री शीश राम ओला: पहले इसको सुन लूं। फिर मैं बाद में बता दूंगा. ..(**व्यवधान**).. यह कोई तरीका तो नहीं है कि आपके मन में जो बात आए ...(**व्यवधान**)...

एक माननीय सदस्य: वह जवाब नहीं दे रहे हैं. ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Listen first, please.

श्री शीश राम ओला: मैं बता तो रहा हूं आपको, जो मेरे पास है वह बता रहा हूं.

श्री राजनाथ सिंह सूर्या: सभापति जी, जो पूछा जाएगा वह बताएंगे या जो ...(**व्यवधान**)...

श्री शीश राम ओला: सर, मैं आपसे निवेदन कर रहा था कि 1994-95 में 133.48 लाख मीट्रिक टन यूरिया का हमारे राष्ट्र में उत्पादन हुआ। 1994-95 में 141.43 लाख मीट्रिक टन, यानी 10 लाख टन का अधिक उत्पादन हुआ। 1995-96 में 158.20 लाख टन यूरिया का उत्पादन हुआ और 1996-97 में 156.20 लाख टन यूरिया का उत्पादन हुआ। हमने बराबर कोशिश की है कि यूरिया का उत्पादन बढ़े लेकिन गैस की, नाफ्था की पूर्ण सप्लाई नहीं होने की वजह से, बिजली की कमी होने की वजह से और कहीं मशीनरी में अधिक समय के लिए ख़राबी आने से उत्पादन में कुछ कमी आई है। सर, मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी कोशिश यह है कि हम यूरिया के उत्पादन को बढ़ाएं और इसलिए 6 और परियोजनाएं प्रोडक्शन में आने वाली हैं। इन परियोजनाओं के आने से यूरिया को अच्छी बढ़त होगी, प्रोडक्शन होगा। ये परियोजनाएं हैं— इफ्को— फूलपुर विस्तार एन०एफ०सी०एल०— काकिनाडा, विस्तार इफ्को- कलोल, विस्तार सी०एफ०सी०एल०— गाढ़ेपान, एम०एफ०एल०— मनाली और आर०सी०एल०— थाल.

श्री नरेश यादव: सभापति जी, माननीय मंत्री जी ने अपनी रिप्लाई में खुद स्वीकार किया है कि 1996-97 के प्रथम 6 महीनों में यूरिया के उत्पादन में 5.1 प्रतिशत की कमी आई है। तो 6 महीनों में जो 5.1 प्रतिशत की कमी थी, एक वर्ष में इसके दुगुना होने की संभावना है। 10 प्रतिशत की कमी यूरिया की हो जाएगी। महोदय, हर वर्ष इस देश का किसान खेत में जो यूरिया डालता है, उस यूरिया की मात्रा बढ़ती जा

रही है। देश मे यूरिया की कमी है। यह मंत्री जी ने स्वीकार किया है। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि यूरिया जिस रॉ-मेटिरियल से बनता है— गैस से या नापथा से- क्या देश में उसकी कमी है? यदि कमी है तो उसे पूरा करने के लिए आप क्या उपाय कर रहे हैं? क्या आपने गैस के लिए किसी देश से समझौता किया है जिससे कि आप गैस आधारित यूरिया का और अधिक उत्पादन करके देश में जो कमी है, उसकी भरपाई कर सकें?

श्री शीश राम ओला: सभापति महोदय, गैस का हमारे मंत्रालय से कोई संबंध नहीं है, पेट्रोलियम मिनिस्ट्री का उससे संबंध है। पेट्रोलियम मिनिस्ट्री ही हमको गैस आवंटित करती है और यहां से गैस और नैफ्था आने के बाद हमको उसका एलॉटमेंट होता है। जो स्थिति है वह मैंने आपके समक्ष रखी है, हर साल के आंकड़े मैंने आपके सामने रखे हैं। यहां 5 लाख या 6 लाख टन यूरिया की कमी थी। मैंने स्पष्ट तौर से निवेदन किया है कि इन 3-4 यूनिटों में उत्पादन में कमी आई, जिसकी वजह से हमारे यहां यूरिया उत्पादन के लक्ष्य में कमी हो गई। इस वर्ष का हमारा उत्पादन का लक्ष्य 1997-98 का 175 लाख टन है। हम कोशिश कर रहे हैं कि आयात कम हो और देश में यूरिया का उत्पादन अधिक हो। हम इसके लिए प्रयत्नशील है। हमें उम्मीद है कि निश्चित तौर से यूरिया का उत्पादन राष्ट्र में बढ़ेगा और आयात कम होता चला जाएगा।

श्री नरेश यादव: सभापति महोदय, मंत्री जी ने अपने जवाब में कहा है कि पहले 6 महीनों में 5.1 परसेंट यूरिया की कमी हुई है। अब मंत्री जी बार-बार कबूल कर रहे हैं कि यूरिया की कोई कमी नहीं है। कहीं न कहीं अंतर तो है। या तो जवाब गलत आया है या मंत्री जी सही बोल रहे हैं। अंतर कहां है? मंत्री जी कबूल कर रहे हैं कि यूरिया की कमी नहीं है और जवाब में दिखाया गया है कि यूरिया की कमी है।

श्री शीश राम ओला: मेरे ख्याल से समझ में फर्क है। ये शायद मुझे समझ नहीं पा रहे हैं। मैं स्पष्ट निवेदन कर रहा हूं कि 3 यूनिटों में प्रोडक्शन ठीक से न होने की वजह से कमी आई। इंडोगल्फ 2 लाख 50 हजार टन, आर.सी.एफ. एक लाख, 77 हजार टन, एन.एफ.एल. एक लाख, 66 हजार टन, कुल 5 लाख 93 हजार टन की कमी आई। यह जो कमी है, इसका कारण मैंने स्पष्ट कर दिया है। अब इसके बाद उसी बात को कितनी बार दोहराऊंगा? हम यह चाहते हैं कि यूरिया का उत्पादन राष्ट्र में अधिक हो। इसके लिए 6 और परियोजनाएं प्रोडक्शन में आने वाली हैं। पहले हम जो यूरिया बाहर से लाते थे, अब उससे कहीं कम यूरिया ला रहे हैं और आहिस्ता-आहिस्ता इसमें और कमी आएगी और हमारे यहां उत्पादन अधिक होगा, यह हम चाहते हैं।

श्री जर्नादन यादव: सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि देश में यूरिया की कितनी आवश्यकता है और आपने उत्पादन कितना किया है? आज यूरिया का देश में बहुत अभाव है और उसको आप हिंदुस्तान के उत्पादन से पूरा नहीं कर पा रहे हैं। इसलिए आप विदेशों से यूरिया मंगा रहे हैं। इस देश में यूरिया की आवश्यकता कितनी है और उत्पादन कितना कर रहे हैं और विदेशों से कितना मंगा रहे हैं, यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री दीपांकर मुखर्जी: देश में 211 लाख टन की जरूरत है। 1997-98 में और मंत्री बोल रहे हैं कि 175 लाख टन का उत्पादन करेंगे। बाकी इंपोर्ट करेंगे क्या ...(**व्यवधान**)

Two hundred lakh tonnes of urea is required in 1997-98. ...*(Interruptions)*

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI: Sir, the CPI Member has got now a CPM Deputy Minister or Minister of State. It is good. There is a good harmony in the House.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: I am asking the Minister to reply.

श्री जर्नादन यादव: मंत्री जी जवाब दीजिए।

श्री शीश राम ओला: मैं चैलेंज करता हूं कि मेरी जानकारी आंकड़ों के हिसाब से तथ्यपूर्ण है। सन् 1993-94 में आयात हुआ था 27.85 लाख टन, 1994-95 में आयात हुआ था 28.70 लाख टन और 1995-96 में आयात हुआ था 37.82 लाख टन।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, we are being misled. There is a gap of 13 lakh tonnes. ...*(Interruptions)*

MR. CHAIRMAN: The Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

"Study on Environmental Threat by Emission of Greenhouse Gases"

*582. DR. MOHAN BABU: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state: